Vol. 7, Issue: 1, January: 2019
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

# प्रवर्तमान समय में शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षक की जवाबदेही

अजयकुमार हसमुखभाई जादव
शोध छात्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपूर

किसी देश की पहचान का आधार उसकी संस्कृति होती है। शिक्षा इसी संस्कृति के हस्तांतरण, संरक्षण एवं संवर्धन का साधन है। अत: किसी देश की शिक्षा व्यवस्था की जवाबदेही ऐसी होनी चाहिए, जिसमें उसकी संस्कृति के मूल तत्व विधमान हो और इसी आधार पर उसका संचालन हो। विश्व के प्राय: सभी देशो की शिक्षा की अपनी पहचान है, चाहे व्ह अमरिका या ब्रिटन हो अथवा रूस या चीन हो। जो देश कभी जगदगुरु था, दुर्भाग्य से आज उस देश की अपनी कोई शैक्षिक जवाबदेही व् शिक्षा की अपनी कोई पहचान नहीं है | इन पाश्चात्य देशों की शिक्षा से उसकी पहचान अवश्य सम्भव है, पर स्वाधीन भारतीय शिक्षा के चिन्ह उसमे देखने को नहीं मिलते | शिक्षा में राष्ट्रवादी भारतीय तत्वों के अभाव के कारण ही शिक्षा की जवाबदेहि का प्रश्न उठाया गया है|

हमारी सरकार वैश्वीकरण की नीति अपना रही है। वैश्वीकरण का अर्थ है हमारी अर्थव्यवस्था और विश्व अर्थव्यवस्था में सामंजस्य स्थापित करना। इस प्रक्रिया में हम आर्थिक व शेक्षिक रूप से वैश्विक अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक रूप से निर्भर होते हैं। ऐसा काई स्तरों पर होता है। अनेक विदेशी उत्पादक अपना माल और सेवायें भारत में बेच सकते हैं। हम भी अपना निर्मित माल और सेवाएँ भी दुसरे देशों को बैच सकते हैं।

वैश्वीकरण उन व्यक्तियों के लिए भी सहायक होता है, जिनके पास भारत में उद्योग लगाने के लिए धन उपलब्ध है। इस प्रकार का उत्पादन देश मै विक्रय के लिए अथवा निर्यात के लिए हो सकता है। इसी प्रकार भारतीय उद्यमी भी दुसरे देशो में जाकर पूँजी निवेश कर सकते हैं। वैश्वीकरण में केवल पूँजी ही नहीं वरन् एक देश से दूसरे देश मैं श्रमिकों का आदान-प्रदान भी सम्मिलित है।

इससे पूर्व भारत सरकार ने वस्तुओं के आयात पर प्रतिबन्ध लगा रखै थे ताकि घरेलू उत्पादकों को संरक्षण मिले 1 इन प्रतिबन्धो से देश के अन्दर तकनीकी योग्यता प्राप्त करने में सहायता मिली। नई नीति के अन्तर्गत भारतीय अर्थवावस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोडने की आवश्यकता एवं अनुभव का आदान-

प्रदान विभिन्न देशों में सम्भव हो सके, जिससे शैक्षिक जवाबदेही सम्भव हो सके। इस नीति के अनुसरण के लिए सरकार ने माल के आयात पर से प्रतिबन्ध हटा दिये, आयातित माल पर कर कम कर दिये और विदेशी निवेशकों को भारत मैं निवेश के लिए प्रोत्साहन दिया।

शैक्षिक जवाबदेही के अन्तर्गत हम कह सकते हैँ कि विकास तो हो पर इससे परिवेश को हानि न पहुँचे। साथ ही वर्तमान विकास भली पीठी की आवश्यक्ताओं के साथ किसी प्रकार का समझौता न करे। यह भी अनुभव किया गया कि तीव्र आर्थिक और औद्योगिकीकरण की प्रगति के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध विनाश हुआ है। इन संसाधनों में मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन, जो कि विश्व की अधिकांश ऊर्जा की पूर्ति करते हैं, सीमित हैं।

इसी कारण समी देशों के बिकास को खतरे का अन्देशा है। यद्यपि जीवाश्म ईधन और खनिज पदार्थ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैँ, परन्तु उनके प्रयोग से पर्यावरण और परिस्थितियों की हानि होती है, उनसे प्रदूषण फैलता है और प्रकृति का सन्तुलन बिगडता जाता हे। अत: आज वैश्विक चिन्ता का विषय यह है कि शैक्षिक व आर्थिक विकास के लिए ऐसी रणनीति अपनायी जाय, जिसमें पर्यावरण सहायक हो। यह भी सत्य है कि आज विश्व में जीवाश्म ईधन का प्रयोग करने वाले अधिकांश देश विकसित हैं। अत: ऐसे प्रदूषित करने वाले पदार्थों से पर्यावरण को होने वाली हानि से रोकने का दायित्व ऐसे देशों पर है। इसके लिए जिन उपायों पर विचार किया जाता है उनमें कुछ हैँ-उर्जा के स्वच्छ व नवीनीकरण योग्य स्त्रोतों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाय, जीवाश्म ईधन का प्रयोग कम किया जाय, जैविक कृषि भूमण्डलीय तापमान को कम करने और कार्बन छोडने की सोमा निर्धारित करने

के प्रयास किये जायँ। कई देशों के मध्य इस प्रकार के अनेक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते हुए हैँ। इनमें से कुछ हैँ- पर्यावरण सम्बन्धी समझौता, जलवायु परिवर्तन और भूमण्डलीय तापन समझौता। जहॉ ये समझोते वर्तमान और भावी पीढी के हितों की रक्षा करेंगे। वहीं इन परिस्थितियों में भारत के लिए आवश्यक हे कि ऐसे कानून ओर नियम बनाये जायें, जिसमैँ पर्यावरण कीं रक्षा हो, ऊर्जा के प्रयोग को सीमित किया जा सके तथा शैक्षिक ऊर्जा क्रो अधिकाधिक विकसित करने की शैक्षिक जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके; ताकि हम अपने प्राचीन शैक्षिक स्वरूप क्रो प्राप्त कर सकें। इस हेतु हमें अपनी शिक्षा में राष्ट्रीय संस्कृति के चिन्ह विद्यमान करने होंगे, उन्हें राष्ट्रवादी बनाना होगा तभी हमारी शैक्षिक जवाबदेही सही साबित हो सकेगी|

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

1. अध्यापक शिक्षा असमंजस में, मया शंकर सिंह, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्श, नई दिल्ली|

2. पाठ्यक्रम विकास एवं अनुदेशन, डॉ. आर.ए.शर्मा, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ
3. માધ્યમિક શિક્ષણની વિસ્તરતી ક્ષિતિજો, ડો, જીતેશકુમાર તલાટી, અમોલ પ્રકાશન, અમદાવાદ.